"कह दो : हम ईमान लाए अल्लाह पर और उस चीज़ पर जो हमारी ओर उतारी गई और उस चीज़ पर जो इब्राहीम, इस्माईल, इस्हाक, याकूब और उनकी सन्तान की ओर उतारी गई, और जो मूसा और ईसा को दी गई, और जो दूसरे सभी नबीयों को उनके रब की ओर से मिली हम उनमें किसी को उस संबन्ध से जो उनमें पाया जाता है अलग नहीं करते, और हम उसी के आज्ञाकारी हैं।" (कुरआन २:१३६)

कुरआन बात को जारी रखते हुए इसा आयत के आगे मुसलमानों को यह निर्देश भी देता है कि यही सच्ची एवं निष्पक्ष आस्था है। अगर दूसरे समुदाय भी इस बात को मानने लगेंगे तो वे सीधे रास्ते पर हो जाएंगे। और अगर वे ऐसा नहीं करते तो वे सिर्फ अपनी सनक एवं हठधर्मी की पैरवी कर रहे होंगे और अल्लाह उनसे हिसाब लेने के लिए काफी है। इसलिए अगली आयतों में है:

"तो यदि वे वैसे ही ईमान लाए जैसे तुम उनपर ईमान लाए हो, तो उन्होंने मार्ग पा लिया। और यदि वे मुँह मोड़ें, तो फिर वही विरोध में लीन हैं, तो अल्लाह स्वयं तुम्हारी जगह उनसे निबटने के लिए काफी है। वह सुनने वाला और जानने वाला है। अल्लाह का रंग अपनाओ और अल्लाह से अच्छा रंग किसका होगा ? हम तो उसी की इबादत करने वाले हैं।" (कुरआन २:१३७-१३८)

पैगंबरी के बारे में दो महत्त्वपूर्ण बिन्दुओं को जानना ज़रूरी है। यह बिन्दू पैगंबर ईसा और मुहम्मद (स०) से संबंधित हैं, जिनको पैगंबर की हैसियत से सामान्यत: गलत तरीके से समझा गया है।

कुरआन ने ईसा के खुदा होने या खुदा का बेटा होने का कड़ा विरोध किया है, बल्कि उन्हें अल्लाह के एक महान पैगंबर के रूप में प्रस्तुत किया है। कुरआन इस बात को स्पष्ट करता है कि ईसा (अ०स०) की बिना पिता के पैदाइश उन्हें खुदा का पुत्र नहीं बनाती, इसको इस तरह समझाया गया कि आदम को अल्लाह ने माता-पिता के बिना पैदा किया:

"अल्लाह के पास ईसा की मिसाल आदम की तरह है, जिसे मिट्टी से पैदा कर के कह दिया कि हो जा, बस वह हो गया।" (कुरआन ३:५९)

दूसरे नबियों की तरह ईसा (अ०स०) ने भी चमत्कार दिखाए। मिसाल के तौर पर उन्होंने मुर्दा को जीवित किया तथा अंधे एवं कोढ़ियों को ठीक कर दिया, जब्कि इन चमत्कारों को करते समय ही उन्होंने इस बात को स्पष्ट कर दीया था कि यह चमत्कार अल्लाह की ओर से हैं।

वास्तव में ईसा के मानने वालों में उनके व्यक्तित्व एवं उनके संदेश को लेकर हमेशा गलतफहमियाँ रही, क्योंकि उनके जीवन काल में उनके द्वारा दिये गए दिव्य संदेश को संरिक्षत नहीं किया गया, बल्कि १०० वर्षों बाद यह काम हुआ। कुरआन के अनुसार वे बनी इस्राईल के समुदाय की ओर भेजे गए थे। उन्होंने मुसा (अ०स०) पर अवतरित तौरात की पुष्टी की और अपने बाद आने वाले अंतिम पैगंबर की खुशखबरी दी;

"और जब मरियम के पुत्र ईसा ने कहा कि हे (मेरी कौम) इस्राईल की औलाद! मैं तुम सब की तरफ अल्लाह का रसूल हूँ, मुझसे पहले की किताब तौरात की पुष्टी करने वाला हूँ, और अपने बाद आने वाले रसूल की खुशखबरी सुनाने वाला हूँ जिनका नाम अहमद है।" (कुरआन ६१:६)

नोट: अहमद जिसका अर्थ है "प्रशंसनीय" पैगंबर मुहम्मद (स०) का नाम है।

हालांकि अकसर यहुदियों ने ईसा (अ०स०) की पैगंबरी का इनकार किया। उन लोगों ने तो उनकी जान तक लेने का षडयंत्र रच डाला और अपनी समझ के अनुसार उन्हें सूली दे दी। परंतु कुरआन उनके इस मत का विरोध करता है और कहता है कि उन्होंने न तो ईसा को मारा न ही सूली दी, बल्कि उन्हें तो अल्लाह ने ऊपर उठा लिया। कुरआन की एक आयत के अनुसार ईसा (अ०स०) दोबारा इस धरती पर आएंगे और सारे यहूदी एवं ईसाइ उनकी मृत्यू से पहले उन पर विश्वास ले आएंगे। पैगंबर मुहम्मद (स०) ने भी इसके बारे में विस्तार से बताया है।

अल्लाह के अंतिम पैगंबर मुहम्मद (स०) अरब में ६०० ई. में पैदा हुए। चालीस वर्ष की आयू तक मक्का के लोग उन्हें सिर्फ एक इंसान के रूप में जानते थे जो बहुत ही सच्चा तथा उत्कृष्ट चरित्र का मालिक था यहाँ तक कि लोग उन्हें "अल-अमीन"(सबसे सच्चा) कहते थे। वे खुद नहीं जानते थे कि उन्हें बहुत जल्द पैगंबर बनाया जाएगा तथा अल्लाह की ओर से दिव्य संदेश प्राप्त होने वाला है। उन्होंने मक्का के मूर्तिपूजकों को यह शिक्षा दी कि वे लोग सिर्फ एक सच्चे मालिक की पूजा करें और उन्हें उस मालिक का पैगंबर मानें। जो भी ईशवाणी उन्हें प्राप्त हुई उसे उनके अनुयाइयों ने अपने दिलों में कंठस्थ किया तथा चमड़ों एवं लकड़ी पर लिख कर संरिक्षत किया। इसलिए जो कुरआन आज मौजूद है यह वही है जो उस समय उनपर अवतरित हुआ, जिसमें एक मात्रा तक का कोई फेर-बदल नहीं हुआ है, क्योंकि खुद अल्लाह ने इसके संरक्षण की ज़िम्मेदारी ली है। यह कुरआन हर समय के लोगों के लिए मार्गदर्शन की किताब है जो हमारे सच्चे मालिक की ओर से उसके अंतिम पैगंबर मुहम्मद (स०) पर अवतरित हुई है।

संक्षिप्तिकरण:

(स०): सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम -(सलामती हो उनपर)

(अ०स०): अलैहिस्सलाम -(उनपर अल्लाह की सलामती हो)

हमारे सच्चे मालिक की ओर से उसके अंतिम पैगंबर पर अवतरित होने वाले इस दिव्य संदेश को अपनी भाषा में मुफ्त प्राप्त करने के लिए हमसे संपर्क करें:

+91-9920955597 / 9920370659

albirr.foundation@gmail.com | www.albirr.in

इस्लाम

में

पैगंबरी

इस्लाम का ज्ञान

श्रृंखला : ०२

al-birr foundation

पैगंबरी उन धर्मों के लिए कोई नया शब्द नहीं है जिनके बारे में यह माना जाता है कि वे आसमानी धर्म हैं, मूलत: ईसाइयत और यहूदियत। हालांकि इस्लाम में इसका एक अलग ही स्थान एवं महत्त्व है।

इस्लाम के अनुसार अल्लाह ने इन्सान को एक महान उद्देश्य के लिए पैदा किया है कि: सिर्फ उसी की इबादत करो और उसके दिये गए मार्गदर्शन के अनुसार जीवन व्यतीत करो। मनुष्य अपने रोल तथा अस्तित्व के उद्देश्य को तब तक नहीं जान सकता जब तक कि उसे साफ-साफ एवं वास्तविक अनुदेश प्राप्त न हो जाए कि अल्लाह उससे क्या चाहता है? यहाँ पर पैगंबरी की ज़रुरत पड़ती है। इसलिए अल्लाह ने हर जाति में से एक या अधिक पैगंबरों को चुना ताकि लोगों तक अल्लाह का पैगाम पहुँच सके।

कोई पूछ सकता है कि पैगंबरों को कैसे चुना गया और किन लोगों को इस महान सम्मान का हकदार बनाया गया। अत: पूरे इतिहास में से सारे पैगंबरों के बारे में गहरे अध्ययन के बाद एक पैगंबर की तीन महत्त्वपूर्ण विशेषताएँ सामने आती हैं:

वे अपने समुदाय में नैतिक एवं बौद्धिक रूप से सबसे महान होते हैं। यह बहुत ही महत्त्वपूर्ण है क्योंकि पैगंबर का पूरा जीवन उसके मानने वालों के लिए नमूना होता है। उसका व्यक्तित्व ऐसा होना चाहिये जो लोगों को अपनी ओर आकर्षित करे ताकि वे उसके संदेश को स्वीकार करें ना कि उसके दोषमय चरित्र के कारण दूर भागें। दिव्य संदेश के प्राप्त हो जाने के बाद वे अमोघ बन जाते है, अर्थात वे कोई पाप नहीं करते। यह तो हो सकता है कि उनसे कुछ छोटी-मोटी गलतियाँ हो जाए परंतु ईशवाणी द्वारा इन गलतियों का भी सुधार कर दिया जाता है।

चमत्कारों के द्वारा उनकी मदद की जाती है ताकि कोई उन्हें ठग न समझे। ये चमत्कार अल्लाह द्वारा उन के हाथों से करवाए जाते हैं और आमतौर पर ऐसी चीज़ों में होते हैं जिन में उनके समुदाय के लोग माहिर होते हैं ताकि वे लोग इन चमत्कारों की महानता को समझ सकें। हम इसको समझने के लिए उन महान चमत्कारों को देखते हैं जो दुनिया के बड़े धर्मों के तीन बड़े पैगंबरों को अल्लाह ने दिए थे:

यहूदियत, ईसाइयत और इस्लाम। मूसा (अ०स०) के समय के लोग जादू में माहिर थे। तो उनका सबसे बड़ा चमत्कार यह था कि उन्होंने उस समय मिस्र के सबसे बड़े जादूगरों को जादू में पराजित कर दिया था। ईसा (अ०स०) के समय के लोग कुशल चिकित्सक के रूप में जाने जाते थे। इसलिए उनका चमत्कार यह था कि उन्होंने मुर्दा को जीवित किया तथा लाइलाज बीमारियों का इलाज किया। अरब, जो कि मुहम्मद (स०) के समकालीन थे अपनी वाग्मिता एवं आकर्षक कविता के लिए जाने जाते थे। इसलिए मुहम्मद (स०) का सबसे बड़ा चमत्कार कुरआन है, जिसकी तरह की किताब अरबों के सारे महान कवी और भाषणकर्ता बना पाने में असमर्थ थे जबकि खुद कुरआन ने उन्हें इसका चैलेंज दिया था। दूसरे यह कि मुहम्मद (स०) के चमत्कार की कुछ विशेषता भी है। पिछले सारे चमत्कार समय एवं स्थान के लिए सीमित थे, अर्थात वे विशिष्ट लोगों को विशिष्ट समय पर दिखाए गए। जबकि ऐसा मुहम्मद (स०) के चमत्कार- कुरआन के साथ नहीं है। यह चमत्कार सार्वलौकिक एवं हमेशा के लिए है। पिछली एवं वर्तमान पीढ़ियों ने इसके चमत्कारों की गवाही दी है, और भविष्य की पीढ़ियाँ भी ज़रूर इसकी शैली, अंतर्वस्तु एवं आध्यात्मिक उत्थान से परिपूर्ण चमत्कारी प्रकृती का अनुभव करेंगे। इन खूबियों को आज भी परखा जा सकता है और इससे कुरआन के दिव्य स्रोत होने का सबूत मिलता है।

हर पैगंबर ने इस बात को स्पष्ट रूप से कहा है कि उन्हें जो भी संदेश प्राप्त होते है वह उनके स्वयं से नहीं बल्कि अल्लाह की ओर से हैं ताकि इससे मानवजाती का उद्धार हो सके। और उन्होंने उस चीज़ की भी पुष्टी की जो कुछ उनसे पहले अवतरित हुआ तथा उस चीज़ की भविष्यवाणी की जो कुछ उनके बाद आने वाला है। हर युग तथा समय में भेजे गए पैगंबर का काम अल्लाह द्वारा दिए गए संदेश को बिना किसी फेर-बदल के पहुँचाना होता है। अत: सारे पैगंबरों की शिक्षाओं का मूल एवं उद्देश्य एक ही है।

मानवजाती के लिए अल्लाह के आदेशों एवं मार्गदर्शन को पहुँचाने के लिए पैगंबरों की आवश्यक्ता होती है। हमारे पास कोई रास्ता नहीं जिससे हम यह मालूम कर सकें कि हमें क्यों पैदा किया गया? मरने के बाद हमारा क्या होगा? क्या मरने के बाद भी कोई जीवन है? क्या हमें हमारे कर्मों का कोई हिसाब देना है? दूसरे शब्दों में हम कह सकते हैं कि, क्या इस हमारे इस दुनिया के कर्मों के अनुसार हमें इनाम या सज़ा दिया जाएगा? ऐसे और इस तरह के कई सवाल हैं जो खुदा, फरिश्ते, स्वर्ग, नरक इत्यादी के बारे में हैं जिनका उत्तर हमें सीधे तौर पर प्राप्त नहीं हो सकता जब तक की हमारे सच्चे मालिक की ओर से मार्गदर्शन न हो। इसके उत्तर सच्चे होने चाहिये तथा इनको लाने वाला व्यक्ति भी ऐसा हो जिसका हम सम्मान करते हों और जिसके चरित्र पर पूरा विश्वास हो। यही वे कारण है कि पैगंबरी के लिए ऐसे लोगों को चुना गया जिनके बारे में खुद उनका समुदाय उन्हें सबसे अच्छे स्वभाव एवं ऊंचे बौद्धिक क्षमता का मालिक मानता था।

यही कारण है कि कई महान पैगंबरों के बारे में बाइबल में उल्लेखित अपवादात्मक कहानियों को मुस्लिम स्वीकार नहीं करते। उदाहरण के तौर पर, पैगंबर लूत (अ०स०) के बारे में कहा गया कि उन्होंने अपनी बेटियों के साथ शराब के नशे में व्याभिचार किया या यह कि पैगंबर दाऊद (अ०स०) ने अपने एक नेता को मौत के घाट उतरवा दिया ताकि वे उसकी बीवी से शादी कर सकें। मुसलमानों की नज़र में पैगंबरों का स्थान इतना ऊँचा है कि उनके बारे में ऐसा सोचा भी नहीं जा सकता तथा इस्लाम के अनुसार यह झूठी कहानियाँ हैं जिनकी कोई बुनियाद नहीं।

अल्लाह पैगंबरों को चमत्कारिक रूप से समर्थन करता है तथा उन्हें अल्लाह की ओर से निर्देश भी प्राप्त होते रहते हैं। पैगंबरों द्वारा लाए गए संदेश को हम निम्नलिखित वाक्यों में संक्षेप कर सकते हैं:

- खुदा की साफ-सुथरी संकल्पना: उसकी विशेषताएं, उसकी रचनाएं, कौनसी चीज़ें उससे जोड़ी जा सकती है और कौनसी नहीं।
- स्वर्ग, नरक, जिन्न, प्रेत, फरिश्तों तथा अनदेखी दुनिया के बारे में सच्ची जानकारी।
- खुदा ने हमें क्यों पैदा किया? हमारा मालिक हमसे क्या चाहता है तथा मानने या न मानने से क्या इनाम या सज़ा मिलेगी?
- हमारे समाज को खुदा के आदेशानुसार कैसे चलाया जाए? अर्थात वे निर्देश एवं कानून जिनको पूरी तरह और इमानदारी से लागू किया जाए तो हमें खुशहाल एवं आदर्श समाज प्राप्त हो सकता है।

उपर्युक्त चर्चा से यह स्पष्ट हो जाता है कि पैगंबरों का कोई बदल नहीं हो सकता। आज, विज्ञान की दुनिया में इतनी उन्नती के बाद भी अलौकिक दुनिया के बारे में जानकारी का एक ही स्रोत है- ईशवाणी। मार्गदर्शन को विज्ञान या रहस्यात्मक अनुभवों से प्राप्त नहीं किया जा सकता। पहला ज्ञान बहुत ही अधिक भौतिकवादी एवं बहुत ही सीमित है; दूसरा बहुत ही आत्मनिष्ठ एवं बहका देने वाला है। अब कोई पूछ सकता है:

अल्लाह ने इन्सानों के पास कितने पैगंबरों को भेजा? हम यकीन से नहीं कह सकते। कुछ मुस्लिम विद्वानों ने २४० हज़ार पैगंबरों की संख्या का अनुमान लगाया है। हम सिर्फ उसी बारे में निश्चित तौर पर कह सकते हैं जिसके बारे में कुरआन में उल्लेखित है, कि अल्लाह ने हर समुदाय में एक (या अधिक) पैगंबर को भेजा। ऐसा इसलिए कि यह अल्लाह का कानून है कि वह तब तक लोगों की पकड़ नहीं करता जब तक उन्हें स्पष्ट न कर दे, क्या करना है और क्या नहीं। कुरआन में २५ पैगंबरों का नाम उल्लेखित है और यह भी कहा गया है की बहुत से पैगंबरों के नाम मुहम्मद (स०) को नहीं बताए गए। इन २५ पैगंबरों में नूह, इब्राहीम, मूसा, ईसा और मुहम्मद (स०) हैं... यह पाँच अल्लाह के पैगंबरों में सबसे महान है। इन्हें रसूल कहा जाता है।

इस्लामी आस्था की एक सबसे उत्कृष्ट बात यह है कि मुसलमान को सारे पैगंबरों को बिना किसी भेद-भाव या ऊँच-नीच के मानना है। क्योंकि सारे पैगंबर एक ही खुदा की ओर से भेजे गए थे जिनका उद्देश्य भी एक ही था की मानवजाती को खुदा के मार्गदर्शन पर चलाएँ इसलिए सारे पैगंबरों पर विश्वास रखना अनिवार्य एवं तर्कसंगत भी है। कुछ को मानना या कुछ का इनकार कर देना पैगंबरों के रोल को न जानने या जातिवाद की बुनियाद पर ही हो सकता है। इस धर्ती पर सिर्फ मुसलमान ऐसे लोग हैं जो सारे पैगंबरों पर विश्वास रखने को आस्था का एक हिस्सा मानते हैं। यहूदी पैगंबर ईसा और मुहम्मद (स०) का इनकार करते हैं, ईसाइ मुहम्मद (स०) का इनकार करते हैं जो असल में मूसा (अ०स०) के इनकार समान के है क्योंकि वे उनके कानूनों को भी नहीं मानते। मुसलमान उन सभी को अल्लाह का पैगंबर मानते हैं जो इंसानों के लिए मालिक का संदेश ले कर आए। हालांकि उन पैगंबरों द्वारा जो दिव्य संदेश लोगों को प्राप्त हुआ उसमें कई तरीकों से फेर-बदल कर दिया गया। पवित्र कुरआन ने मुसलमानों पर इस बात को अनिवार्य कर दिया है कि वे सारे नबीयों पर विश्वास रखें:।